मुख्य बिंदु

प्रश्न : आपकी बातें सुनता हूं, तो प्रभु-खोज के विचार उठते हैं। लेकिन समझ नहीं पड़ता कि कहां से शुरू करूं?

कहीं से भी शुरू करो—शुरू करो। परमात्मा सब तरफ है। जहां से भी करोगे, उसी में शुरू होगा। कहां से शुरू करूं—इस प्रश्न में मत उलझो। क्योंकि परमात्मा तो एक तरह का वर्तुल है। इसीलिए तो दुनिया में इतने धर्म हैं, क्योंकि इतनी शुरुआतें हो सकती हैं। दुनिया में तीन सौ धर्म हैं। दुनिया में तीन हजार भी धर्म हो सकते हैं, तीन लाख भी हो सकते हैं, तीन करोड़ भी हो सकते हैं। दुनिया में असल में उतने ही धर्म हो सकते हैं, जितने लोग हैं। क्योंकि प्रत्येक व्यक्ति की शुरुआत दूसरे से थोड़ी भिन्न होगी। क्योंकि प्रत्येक व्यक्ति दूसरे से थोड़ा भिन्न है।

कहीं से भी शुरू करो। इस प्रश्न को बहुत मूल्य मत दो। मूल्य दो शुरू करने को। शुरू करो। और ध्यान रखो कि जब भी कोई शुरू करता है, तो भूल-चूक होती है! कहां से शुरू करूं—यह बहुत गणित का सवाल है। इसमें भय यही है कि कहीं गलत शुरुआत न हो जाये; कि कहीं कोई भूल-चूक न हो जाये! कहां से शुरू करूं!

अगर बच्चा चलने के पहले यही पूछे कि कहां से शुरू करूं, कैसे शुरू करूं; कहीं गिर न जाऊं, घुटने में चोट न आ जाये, तो फिर बच्चा कभी चल नहीं पायेगा। उसे तो शुरू करना पड़ता है। सब खतरे मोल ले लेने पड़ते हैं। सब भय के बावजूद शुरू करना पड़ता है। एक दिन बच्चा उठ कर जब खड़ा होता है पहले दिन, तो असंभव लगता है कि चल पायेगा। अभी तक घसिटता रहा था, आज अचानक खड़ा हो गया।

मां कितनी खुश हो जाती है, जब बच्चा खड़ा होता है! हालांकि खतरे का दिन आया। अब गिरेगा। अब घुटने तोड़ेगा। अब लहू-लुहान होगा। सीढ़ियों से गिरेगा। अब खतरे की शुरुआत होती है। जब तक घसिटता था, खतरा कम था, सुरक्षा थी। मगर सुरक्षा में ही कब तक कैद रहोगे!

बच्चे को चलना पड़ेगा। खतरा मोल लेना पड़ेगा; अन्यथा लंगड़ा ही रह जायेगा। और कई बार गिरेगा...।

जब बच्चा पहली दफा बोलना शुरू करता है, तो तुतलाता ही है; कोई एकदम से सारी भाषा का मालिक तो नहीं हो जायेगा! कौन कब हुआ है! तुतलाएगा। भूलें होंगी। कुछ का कुछ कहेगा; कुछ कहना चाहेगा, कुछ निकल जायेगा। लेकिन बच्चे हिम्मत करते हैं—तुतलाने की। इसलिए एक दिन बोल पाते हैं। तुतलाने की हिम्मत करते हैं, इसलिए एक दिन कालिदास और शेक्सपीयर भी पैदा हो पाते हैं। तुतलाने की कोशिश करते हैं, इसलिए एक दिन बुद्ध और क्राइस्ट भी पैदा हो पाते हैं।

तो तुम जब शुरू करोगे, तो यह तो तुतलाने जैसा होगा। इसमें तुम पूर्णता की अपेक्षा मत करना। यह तो अभी घसिटते थे, अब उठ कर खड़े हुए—खतरनाक है। भूल-चूक होने ही वाली है। भूल-चूक होगी ही। जो भूल-चूक से बचना चाहेगा, वह कभी चल न सकेगा, बोल न सकेगा। वह जी ही न सकेगा।

अक्सर ऐसा हो जाता है कि भूल-चूक से बचने वाले लोग वंचित ही रह जाते हैं—जीवन की संपदा से। दुनिया में एक ही भूल-चूक है : और वह भूल-चूक है, भूल-चूक से बचने की अतिशय चेष्टा। तुम पूछते हो : 'आपकी बातें सुनता हूं, तो प्रभु-खोज के विचार उठते हैं। लेकिन समझ नहीं

कहीं से भी शुरू करो। मस्जिद से शुरू करो, मंदिर से शुरू करो, गुरुद्वारे से शुरू करो, मूर्ति से शुरू करो। कुरान-गीता, वेद-पुराण, कहीं से शुरू करो। नदी-पहाड़ पत्थर, किसी की पूजा से शुरू करो। मगर शुरू करो। अगर तुम मेरी सलाह मानना चाहते हो तो मैं कहूंगा : प्रकृति से शुरू करो

सृजन अनंत है परमात्मा का

प्रकृति से शुरू करो

पड़ता कि कहां से शुरू करूं!' कहीं से भी शुरू करो। मस्जिद से शुरू करो, मंदिर से शुरू करो, गुरुद्वारे से शुरू करो, मूर्ति से शुरू करो। कुरान-गीता, वेद-पुराण, कहीं से शुरू करो। नदी-पहाड़ पत्थर, किसी की पूजा से शुरू करो। मगर शुरू करो। अगर तुम मेरी सलाह मानना चाहते हो तो मैं कहूंगा : प्रकृति से शुरू करो। क्योंकि प्रकृति में ही परमात्मा छिपा है। वृक्षों-फूलों को देखो; चांद-तारों को देखो; नदी-सागरों को देखो। परमात्मा इन सब में छिपा है। यहीं तलाशो।

तो पहला परमात्मा का कदम प्रकृति से उठाओ। प्रकृति में दिख जाये, तो फिर सब जगह दिखाई पड़ने लगेगा।

अंग्रेजी की प्रसिद्ध कवि टेनीसन ने कहा है...एक फूल को देखा खिला हुआ और एक आश्चर्यजनक स्थिति में देखा खिला हुआ। एक पत्थरों की दीवाल में, जरा-सी पत्थरों के बीच में संध थी, उसमें से फूल निकल आया था। चौंक कर खड़े हो गये टेनीसन और उन्होंने अपनी डायरी में लिखा : अगर मैं इस एक फूल को समझ लूं पूरा-पूरा, तो मुझे सारा अस्तित्व समझ में आ जायेगा। और परमात्मा की सारी लीला भी। एक फूल में सब छिपा है। एक फूल में!

सरेशाम फिर बाग में आ गया हूं
इसी मखजने-रंगों-बू की लगन में
कि जिसने कभी रूह को ताजगी,
कैफो-मस्ती की दौलत अता की
फजां को दिलावजी-ए-जाविदा दी
निगाहों को हुस्ने-तल के नए जाविये
दिल को तहजबे-जजबात दे कर
रिवायत से प्यार करना सिखाया
यहां कासनी ऊदे-ऊदे, गुलाबी,
शहाबी सभी फूल हैं
सब्जाजारों में जाएं तो बेले की खुशबू
फरावां-फरावां
कहीं मोतिये और चमेली की
महकार राहत-बदामां
गुलाबों के तख्तों में हर
दीदा-ओ-दिल की तस्कीं का सामां
यहां ढाक है
जिसके फूलों से मुगलों ने अपनी
तस्वीर के रंग उभारे
उसी ढाक के रंग की दिलकशी से
'बसावन' ने, 'दसवंत' ने मुगल-ए-आज़म
की दरबार में दाद पाई
यहां एक बूढ़ा शजर भी है
जो जीस्त की खारजारों से तंग आ
के गौतम बना ज्ञान में महब है
सुबक गाम वादे-मुअत्तर के झोंको से फरहां व शादां
हूजूमे गुलो-रंग परतबिसरे कर रहे हैं
सरेशाम फिर बाग में आ गया हूं

—शाम से ही, संध्या से ही बगीचे में आ गया हूं।

इसी मखजने-रंगो-बूकीलगन में

-यह रंगो और सुगंध का खजाना मुझे खींच लाया है।

कि जिसने कभी रूह को ताजगी
कैफो-मस्ती की दौलत अता की

क्योंकि इसी से कभी-कभी जीवन में मस्ती आई; और इसी से कभी-कभी आनंद का स्वाद मिला; और इसी से कभी-कभी आत्मा की झलक मिली।

कि जिसने कभी रूह को ताजगी
कैफो-मस्ती की दौलत अता की।

इसलिए तो कभी सागर को देखते-देखते ध्यान की झलक आ जाती है। कभी हिमालय पर शांत हरियाली को देखते-देखते तुम्हारे भीतर कुछ हरा हो जाता है। कभी गुलाब की पंखुड़ियों को खुलते देखते-देखते तुम्हारे भीतर कुछ खुल जाता है।

हम इस प्रकृति के हिस्से हैं। हम भी एक पौधे हैं। हमारी भी यहां जड़ें हैं। यह जमीन जितनी वृक्षों की है, उतनी हमारी है। ये वृक्ष जैसे जमीन से पैदा हुए, हम भी पैदा हुए हैं। सागर में जो जल लहरें ले रहा है, वही जल हमारे भीतर भी लहरें ले रहा है। वृक्षों में जो हरियाली है, वही हमारा जीवन भी है।

कि जिसने कभी रूह को ताजगी
कैफो-मस्ती की दौलत अता की
फजां को दिलावेजी-ए-जाविदां दी

और इस सौंदर्य को देखते हो—इसने प्रकृति को कैसे अमरता दी है! वृक्ष आते हैं, चले जाते हैं—हरियाली बनी रहती है; हरियाली अमर है। फूल आते

आदमी को जानना हो तो थोड़ी देर के लिए आदमी से मुक्त हो जाओ; थोड़ी दूरी बनाओ; थोड़े वृक्षों से दोस्ती करो; पशु-पौधों-पक्षियों से दोस्ती करो। और तब तुम एक दिन जब आदमी पर लौट आओगे; और ये पक्षियों, पौधों, वृक्षों से जो तुम पाठ लेकर आओगे और तुम्हारा हृदय, तुम्हारी भावनाएं सभ्य हो गई होंगी

हैं, चले जाते हैं—फुलवारी बनी रहती है; फुलवारी अमर है। आज एक पौधा है, कल दूसरा होगा, परसों तीसरा होगा—लेकिन तीनों किसी एक ही जीवन के अंग हैं। एक ही सिलसिला है। एक ही सातत्य है।

फजां को दिलावेजी-ए-जाविदां दी
निगाहों को हुस्ने-तलब के नए जाविये

और जिसने प्रकृति को देखा, उसी को देखने के नए कोण, नई दृष्टियां, नए दर्शन उपलब्ध होते हैं। 'निगाहों को हुस्ने-तलब के नए जाविये।' उसी को सौंदर्य को परखने की नई आंख मिलती है, नई कसौटियां मिलती हैं।

'दिल को तहजीबे-जजबात दे कर।'... और उसी प्रकृति के माध्यम से भावना को सभ्यता मिलती है। जो लोग प्रकृति से अपरिचित हैं, उनकी भावना असभ्य होती है। जिसने कभी फूल खिलते नहीं देखा, वह आदमी अभी पूरा आदमी नहीं। और जिसने कभी पक्षियों के गीत शांति से बैठ कर नहीं सुने, और जो आदमियों की आवाज ही सुनता रहा है, वह आदमी नहीं। और जिसने कभी रात के चांद-तारों से गुफ्तगू न की, वह आदमी आदमी नहीं; वह आदमी बहुत अधूरा है।

लंदन में कुछ वर्षों पहले एक गणना की गई—लंदन के बच्चों की। उनसे प्रश्न पूछे गये। जब मैंने गणना देखी, तो मेरा हृदय आंसुओं से भर आया। लंदन के दस लाख बच्चों ने यह कहा कि उन्होंने गाय नहीं देखी, खेत नहीं देखे। सीमेंट से पटी सड़कें जिंदगी की खबर नहीं देती, मौत की खबर देती हैं। सीमेंट के खड़े हुए आकाश छूते मकान, जहां से वृक्ष विदा हो गये हैं, वहां से परमात्मा भी विदा हो गया है। मशीनें और आदमी की बनाई हुई चीजें कैसे तुम्हें परमात्मा की खबर दें! आदमी की बनाई चीजें आदमी को खबर देती हैं। कारें हैं, ट्रेनें हैं, हवाई जहाज हैं, बड़े कल-कारखाने हैं, धुआं फेंकती हुई उनकी बड़ी चिमनियां हैं, बड़े ऊंचे मकान हैं, चौड़े सपाट सीमेंट के रास्ते हैं—इसमें तुम परमात्मा को कहां खोजोगे! इससे तुम्हें अगर परमात्मा के संबंध मे शक होने लगे, तो आश्चर्य क्या!

परमात्मा को खोजना हो, तो वहां खोजो, जहां चीजें बढ़ती हैं। बड़े से बड़ा मकान भी अपने-आप नहीं बढ़ता। उसमें जीवन नहीं है। और लंबे से लंबा रास्ता भी अपने-आप नहीं बढ़ता उसमें जीवन नहीं है। एक बीज में ज्यादा छिपा है; जितना लंदन में, न्यूयॉर्क या बंबई में छिपा है, उससे ज्यादा एक छोटे-से बीज में छिपा है, क्योंकि बीज बढ़ता है। बीज में जीवन छिपा है और जीवन में परमात्मा छिपा है।

'दिल को तहजीबे जजबात दे कर।'...और जिस आदमी ने आदमी की बनाई चीजें देखीं, वह आदमी कठोर हो जायेगा। जिसने परमात्मा की कोमल बनाई चीजें देखीं, वह आदमी भावनाओं की दृष्टि से सभ्य हो जायेगा।

दिल का तहजीबे-जजबात दे कर
रिवायत से प्यार करना सिखाया।

और जिसने प्रकृति को देखा, वही शाश्वत को प्रेम कर पायेगा, क्योंकि वह देखेगा : यहां शाश्वत है। गुलाबों के फूल बहुत हुए और गये, लेकिन गुलाब का फूल बना है। कुछ फर्क नहीं पड़ता—एक फूल जाता है, दूसरा उसकी जगह भर देता है। परमात्मा का सृजन अनंत है।

यहां कासनी ऊदे-ऊदे गुलाबी,
शहाबी सभी फूल हैं!

और इस प्रकृति को तुम देखोगे, तो तुम्हें समझ में आयेगा : यहां कितने-कितने ढंग के फूल हैं! कितने रंग, कितने ढंग! कितने अद्वितीय! कहां गुलाब, कहां गेंदा, कहां कमल, कहां चंपा, कहां चमेली! सब कितने अलग! और सब में एक का ही वास है। और सब में एक की ही सुवास है।

ऐसे ही लोग भी अलग-अलग है! ऐसे ही लोग भी भिन्न-भिन्न हैं। उनकी प्रार्थना भी भिन्न-भिन्न होंगी। उनकी भावनाएं भी भिन्न-भिन्न होंगी।

प्रकृति को देखोगे, तो तुम्हें भिन्नता में एकता दिखाई पड़ेगी। और जिसको भिन्नता में एकता दिखाई पड़ गई, उसको मनुष्य का अन्तस्तल दिखाई पड़ गया।

यहां कासनी ऊदे-ऊदे, गुलाबी, शहाबी
सभी फूल हैं।
सब्जाजारों जाएं तो बेले की खुशबू

और अगर जरा भीतर घुसें तो बेले की मोहक, बेले की खुशबू! 'फारवां-फारवां'...और जैसे-जैसे पास जाओ वैसे-वैसे बढ़ती जाती है। फारवां-फारवां!

'कहीं मोतिये, कहीं चमेली की महकार राहत-बदामां'...

कहीं मोतिये, कहीं चमेली की महकार, आनंददायी महकार!

'गुलाबों के तख्तों में हर दीदा-ओ-दिल की तस्कीं का सामां...

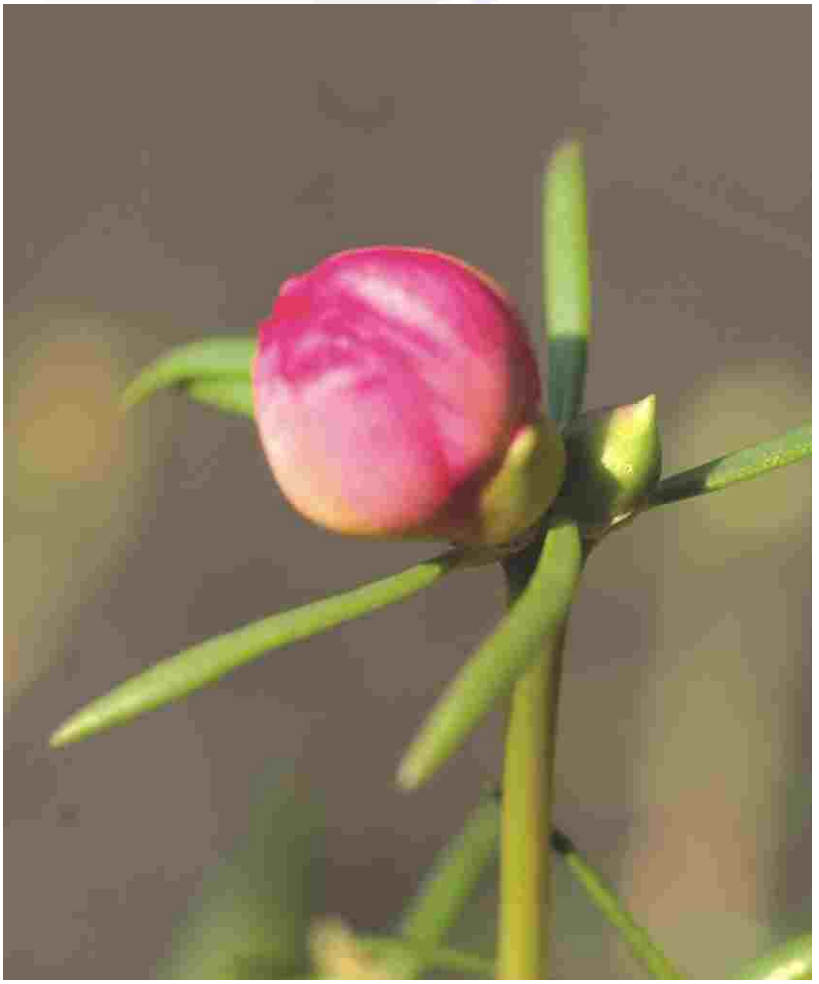

और हर फूल में, अगर तुम्हारे पास देखने की आंख हो, तो तुम्हारे दुखों को छीन लेने की सामर्थ्य है; तुम्हारी बेचैनी को छीन लेने की सामर्थ्य है।

'गुलाबों के तख्तों में हर दीदा-ओ-दिल की तस्कीं का सामां...

—नजर और दिल को संतुष्ट कर दे, ऐसा रहस्य, ऐसा जादू चारों तरफ छाया हुआ है।

यहां ढाक है।

जिसके फूलों से मुगलों ने अपनी तस्वीर के रंग उभारे।

—वहां ढाक नाम का वृक्ष है, जिसके रंग मुगल चित्रकला में दिखाई पड़ेंगे।

उसी ढाक के रंग की दिलकशी से

'बसावन' ने, 'दसवंत' ने

मुगल-ए-आज़म के दरबार में दाद पाई।

ये दो चित्रकार थे अकबर के जमाने में—बसावन और दसवंत। उन्होंने ढाक के रंगों से ही चित्र रंगे हैं और बड़ी दाद पाई, बड़ी इज्जत पाई।

यहां एक बूढ़ा शजर भी है।

—यहां एक बूढ़ा वृक्ष भी है।

यहां एक बूढ़ा शजर भी है।

जो जीस्त के खरजारों से

तंग आ के गौतम बना

—जो जिंदगी के दुखों, पीड़ाओं, कष्टों, जो जिंदगी के कांटों से बहुत परेशान होकर गौतम बन गया है।

यहां एक बढ़ा शजर भी है।

जो जीस्त के खारजारों से तंग आ के गौतम बना।

ज्ञान में महब है।

—जो अपने ध्यान में बैठा है। जो शांत हो गया है। जिसने बाहर से आंख बंद कर ली है। जो अपने भीतर डूब गया है।

यहां एक बूढ़ा शजर भी है।

जो जीस्त के खारजारों से तंग आ के गौतम बना

ज्ञान में महब है।

सुबह गान वादे-मुअत्तर के झोंकों से फरहां व शादां

हुजूमे गुलो-रंग पर तब्सिरे कर रहे हैं।

—और मंद गति से सुगंधित हवा आ रही है, प्रसन्न हवा आ रही है। और फूलों के रंगों पर विचार-विमर्श कर रही है। हर फूल के पास थोड़ी देर ठहरती है, देखती है, रस लेती है; आगे बढ़ जाती है, सोचती है।

प्रकृति के पास जाओ।

तुम पूछते हो : कहां से शुरू करूं?

मैं कहता हूं : प्रकृति से शुरू करो। प्रकृति में डूबने लगो। एक घंटा तो कम से कम खोज ही लो, जो आदमियों से दूर, एक दूसरी भाषा में, एक दूसरे जगत में तुम्हें ले जाये। आदमी जरूरत से ज्यादा आदमी से भर गया है। उससे छुटकारा चाहिए। थोड़ा दरवाजा खोलो। और प्रकृति श्रेष्ठतम है, जहां से राह बन सकती है। और जब प्रकृति को देखने की तुममें सामर्थ्य आ जायेगी, तो तुम अचानक पाओगे : परमात्मा दूर नहीं, यहीं छिपा है। यह सारा राग-रंग उसी का है। इस सबके पीछे उसी का हाथ है और इस सबके पीछे उसी के प्राण की धड़कन है उसी का हृदय धड़क रहा है।

आदमी में ही रहे, आदमी में ही उलझे रहे, तो चूकते चले जाओगे। आदमी को भूलो-बिसारो।

मैं तुमसे यह नहीं कहता हूं कि तुम सदा के लिए जंगल भाग जाओ। मैं तुमसे यह भी नहीं कहता हूं कि तुम सदा के लिए वृक्षों और पौधों के हो जाओ। वह भी गलती होगी। क्योंकि ऐसे तो जिस दिन तुम्हें समझ आयेगी, तुम पाओगे : आदमी भी उसी की अभिव्यक्ति है। उसकी सबसे बड़ी अभिव्यक्ति आदमी है। फूलों में कुछ भी नहीं फूला है—आदमी में चैतन्य फूला है। मगर शुरुआत करो—अ ब स से। आदमी को शायद तुम अभी समझ भी न पाओ। शुरुआत करो—तुतलाने से। फिर यह आदमी नाम के महाकाव्य को भी समझ पाओगे।

जिस दिन फूल में तुम्हें परमात्मा की छवि दिख जायेगी, उस दिन क्या तुम्हें लोगों की आंखों में परमात्मा नहीं दिखाई पड़ेगा? कौन फूल लोगों की आंखों से मुकाबला कर सकता है? जिस दिन तुम्हें फूलों में परमात्मा दिखाई पड़ेगा, उस दिन मुस्कुराहट में किसी के ओंठों पर तुम्हें परमात्मा नहीं दिखाई पड़ेगा? कौन फूल आदमी की मुस्कुराहट का मुकाबला कर सकता है? हां, फूल चटखते हैं और उनकी आवाजें होती हैं; लेकिन जब कोई आदमी हंसता है और फूलझड़ी झरती है हंसी की, तो कौन फूल उसका मुकाबला कर सकता है! माना कि वृक्ष हरे हैं, और माना कि वृक्ष बड़े शांत हैं; मगर कौन आदमी की मस्ती और आदमी के जीवन और आदमी की उमंग और आदमी के उत्साह का मुकाबला कर सकता है!

यह सच है कि कभी तुम्हें बूढ़ा वृक्ष मिल जाये, जो अपने भीतर शांत बैठा है, मौन बैठा है, ध्यान में डूबा है। लेकिन गौतम बुद्ध का मुकाबला तो कोई भी वृक्ष न कर पायेगा—वह वृक्ष भी नहीं, जिसके नीचे बैठ कर गौतम बुद्ध बने।

मनुष्य की चेतना तो आत्यंतिक, आखिरी फूल है—जगत का, अस्तित्व का। इसलिए मैं यह नहीं कहता कि आदमी से सदा के लिए भाग जाओ। मैं यह कहता हूं : आदमी को जानना हो तो थोड़ी देर के लिए आदमी से मुक्त हो जाओ; थोड़ी दूरी बनाओ; थोड़े वृक्षों से दोस्ती करो; पशु-पौधों-पक्षियों से दोस्ती करो। और तब तुम एक दिन जब आदमी पर लौट आओगे; और ये पक्षियों, पौधों, वृक्षों से जो तुम पाठ लेकर आओगे और तुम्हारा हृदय, तुम्हारी भावनाएं सभ्य हो गई होंगी; तुम किसी काव्य से, अभिनव काव्य से भरे जब आदमी को फिर से देखोगे, तब तुम पहचानोगे कि आदमी परमात्मा की प्रतिलिपि है। प्रकृति से शुरू करो।

— ओशो

कहै कबीर मैं पूरा पाया

चौदहवां प्रवचन, अंतिम प्रश्न

(पूरा प्रवचन टेप पर भी उपलब्ध है)